JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुंदेली धरती से मुगल साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकने वाले महावीर छत्रसाल

Balkishun Chaurasia

मध्यकालीन भारत वर्ष के अनूठे रणवांकुरे बुंदेल केसरी महाराज ने अपने यशस्वी योद्धा पिता चंपत राय की मृत्यु के बाद बाल्यकाल में जिन संघर्षो को अपनी शक्ति का स्रोत बना कर मात्र 25 सैनिकों की सहायता से मुगल साम्राज्य को हिला कर रख दिया । और अपने जीवन काल में 52 युद्ध लड़कर विजयी होने के बाद विशाल स्वतंत्र बुंदेलखंड राज्य की स्थापना की, महाराजा छत्रसाल का जन्म मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले के ककर-कचनए ग्राम के समीप मोर पहाड़ी के जंगल में ज्येंष्ठ शुक्ल तृतीया संवत 1706(सन 7949) उस समय हुआ जब उनके पिता चंपत राय मुगल सम्राट शाहजहां के विरुद्ध अपना स्वातंत्रय अभियान छेड़ने के कारण अपनी जागीर महेवा (टीकमगढ़) से हाथ धो बैठे थे। वे तब मुगल सैनिकों के बढ़ते दबाव से वन-वन भटक रहे थे। ऐसी स्थिति में छत्रसाल का प्रारंभिक जीवन अत्यंत कठिनाइयों से गुजरने लगा । जब ये मात्र 12 वर्ष के थे, माता-पिता के बलिदान का समाचार उन्हें सुनाया गया । छत्रसाल ने अपने पिता के अधूरे संघर्ष को पूरा करने का संकल्प लिया।

छतरपुर जिला मुख्यालय से झांसी रोड पर 19 कि. मी. दूर मऊ महेंवा -सहानियां नामक तीन प्राचीन गांवों की फाटा एवं गुरैया पहाड़ियों के बीच आज भी महाराज छत्रसाल का दरबार हाल, रानी कमलापति का स्मारक, छत्रसाल स्मारक, हृदयशाह महल, मस्तानी नर्तकी महल, शीतलगढ़ी, बावन चौक, बादल महल, आदि भग्नावशेषों के रूप में विद्यमान है । यही छत्रसाल दरबार हाल को 12 सितंबर 1955 को राज्य संग्रहालय बनाकर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लोकार्पित किया था, यहां छत्रसाल छत्रसाल के अस्त्र-शस्त्र अंगरखा, आदिल शेरशाह की तोप, छत्रसाल के प्रधान सेनापति रायमन दऊआ की तलवार, ढाले भाले,,बल्लम, बरछी,नराच, गुर्ज,गंदाफरसा,,खांडा, अंकुश, तीरकमान, अनेक प्रकार

की तलवारें, बंदूके, तोंपे रखी गई हैं। साथ ही ताम्रपत्र एवं शिलालेख हैं जो विक्रम संवत 380 के सम्यक इतिहास के प्रमाण है।

यह क्षेत्र प्राचीन चेदि जनपद है ।कालांतर में जैजाक मुक्ति एवं बाद में बुंदेलखंड के रूप में जाना गया ।वैदिक युग रामायण काल में यहां दंडकारण्य क्षेत्र का भाग था।महाभारत में वर्णित चेदि नरेश शिशुपाल इसी क्षेत्र का था। बाद में यह परिहार राजाओं की राजधानी रहा।

छत्रसाल का प्रारंभिक संघर्ष और भी कठिन हो गया, जब उनके सगे संबंधियों, सगी बहन, चाचा ,मामा यहां तक की पिता के पुरोहित ने भी मुगल सत्ता के भय से छत्रसाल का तिरस्कार किया। ज्वर एवं भूख से पीड़ित छत्रसाल एक पेड़ की छाया में निढाल गिर पड़े । तभी नुनहा (टीकमगढ़) गांव की कुम्हारन लड़की सुवासिन उन्हें पहचान कर अपने घर ले गई और सेवा करने लगी। इसी बीच लल्लू गड़रिया ने छत्रसाल को भावी राजा बनने का साहस दिया और महाबली तेली के पास भेजा, जिसके पास छत्रसाल की मां लाड़कुंवर ने अपना सोना -चांदी रख दिया था । महाबली तेली ने सारे गहने छत्रसाल को सौप कर सैन्य संगठन करने की सलाह दी। छत्रसाल ने 25 लोगों का एक संगठन बनाया ,जिसमें दोऊवा, खंगार, गड़रिया, मुसलमान ,नाई ,ब्राह्मण, छत्रिय सभी जाति के लोग रखें । वे सुरक्षित क्षेत्र की तलाश में छतरपुर जिले की मऊ- महेवा-सहानियां गांवों में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पहाड़ियों के बीच बस गए और अपना स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन शुरू किया।

युद्ध कला का अनुभव और मुगल सेना की लड़ाकू शैली जानने के उद्देश से छत्रसाल मिर्जा राजा जयसिंह की सेना में भर्ती हो गए और बीजापुर आक्रमण के दौरान असाधारण वीरता का परिचय दिया। परंतु मुगल सिपहसालारों ने छत्रसाल की वीरता को कोई महत्व नहीं दिया । उपेक्षित होकर छत्रसाल मुगल सेना से निकलकर बुंदेलखंड के स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत के लिए छत्रपति शिवाजी महाराज से मिले , जहां से वे वीरोचित सम्मान युद्ध कला का प्रशिक्षण एवं आशीर्वाद पाकर मऊ-महेवा लौट आए तथा मुगलों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष छेड़ दिया। छत्रसाल ने सर्वप्रथम सहरा के अंधेरों पर विजय प्राप्त करने के बाद मुगलों के शक्तिशाली नगर सिरोंज (मध्य प्रदेश) के हाशिम और आनंद राय को पराजित करके विजय अभियान को धमौनी, पथरिया, चंदापुर लूटते हुए मैहर के बघेला सेनापति को परास्त कर दुर्ग पर कब्जा किया और पूरे धमोनी क्षेत्र में से मुगलों का अस्तित्व समाप्त कर दिया। मुगलों ने धमौनी में नया फौजदार रूहल्ला भेजा, जो छत्रसाल के हाथों से पराजित हुआ। अनेक सफल युद्धों के बाद सन् 1671-1680 मैं चित्रकूट से ग्वालियर, कालपी से गढ़ाकोटा के बीच छत्रसाल का राज्य स्थापित हो गया। इस अवधि में छत्रसाल के हाथों मुनव्वर खां, तहब्बर खां, शेख अनवर, बदरूद्दीन सैयत लतीफ, अब्दुल, बहलोल खां आदि मुगल सेना पति परास्त हुते या मौत के घाट उतारे

गये। स्वतंत्रता संग्राम के द्वितीय चरण सन् (1981-1707) के बीच छत्रसाल ने यमुना, नर्मदा, चंबल एवं टोंस नदियों की सीमा रेखा के बीच विशाल बुंदेलखंड राज्य को स्वतंत्र कर मुगल सत्ता के शिकंजे से मुक्त करा कर अपना संकल्प पूरा किया । परंतु औरंगजेब की मृत्यु के बाद मोहम्मद खान बंगश बहुत बड़ी सेना लेकर बुंदेलखंड पर आक्रमण करने आया और अधीनस्थ राजाओं की गद्दारी के कारण पहली बार बंगश जीत गया। परंतु छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा के सहयोग से बंगश को पराजित कर अंतिम विजय श्री प्राप्त की । तथा परंपरागत जागीर महेवा के नाम से छत्रसाल ने छतरपुर जिले में मऊ -सहानियां के समीप महेवा गांव बसा कर अपनी सैन्य छावनी एवं राजधानी बनाई । जीवन के अंतिम 2 वर्ष शांति के गुजारने के बाद पौष शुक्ल 3 सम्बत 1788 को बुंदेलखंड के लोह पुरुष की दिव्य आत्मा विंध्याचल विंध्याचल की वन-संकुल वीर भूमि में अपनी पूंजीभूत आलोक बिखेरती हुई परम धाम में विलीन हो गयी। महराज छत्रसाल ने केवल महायोद्धा थे, बल्कि भावप्रवण कुशल कवि थे। उनके रचे हुए कवित्त बुंदेलखंड में आज भी लोकप्रिय हैं। उनका एक अनुभव सिद्ध दोहा है ।

रैयत सब राजी रहै, ताजी रहें सिपाहि।
छत्रसाल तेंहि राज को, बाल न बांको जाहि।

वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और स्वामी प्राणनाथ जैसे संत को अपना सद्गुरु मानकर आध्यात्मिक विचारों से ओतपोत जीवन जीते थे उनकी काव्य साधना, उनका प्रशासन, सैन्य प्रतिभा आज शोध का विषय है।

इत यमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौष।
छत्रसाल से लरन कौ, रहीं न कोई हौष,।।

महाराजा छत्रसाल ने स्वदेश और स्वधर्म एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए ही पूरे जीवन मुगल शासकों एवं मुगलों के अत्याचार एवं अनाचार के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष किया। जिसके परिणाम स्वरुप बुंदेलखंड की धरती पर औरंगजेब को फिर पैर रखने का साहस नहीं हुआ। जिस प्रकार महाराजा शिवाजी ने महाराष्ट्र में बादशाहित स्थापित की थी उसी प्रकार छत्रसाल ने बुंदेलखंड को मुगलों से मुक्त करके अपना राज्य स्थापित किया। फिर कभी मुगलों द्वारा न यहां के मंदिर और मूर्तियां तोड़ने का साहस हुआ और ना कभी हिंदू धर्म ,संस्कृति ,साहित्य एवं कला को नष्ट करने का अवसर मिला। छत्रसाल के इस पराक्रम पूर्ण एवं यशस्वी संघर्ष के परिणाम स्वरूप न केवल बुंदेलखंड स्वतंत्र हुआ बल्कि भारत के मुगल साम्राज्य की जड़ें हिल गयी एवं औरंगज़ेब हतास एवं निराश हो गया। इसलिए तो रीतिकालीन महाकवि भूषण ने लिखा है।

पंछी परछीने ऐसे परे पर छीने वीर।
तेरी बरछी ने वर छीने है खलन के।

संदर्भ ग्रंथसूची।

1. राष्ट्र गौरव स्मारिका से साभार-
2. छत्रसाल ग्रंथावली – सं श्री वियोगी हरि
3. बुंदेलखंड का इतिहास -श्री कृष्ण रवि
4. रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन -डॉ रामकुमार वर्मा
5. बुंदेलखंड के केशरी महाराजा छत्रसाल -भगवान दास गुप्त
6. छत्रसाल कलम एवं तलवार के धनी - बृजवासी लाल दुबे।

बालकिशुन चौरसिया शोधार्थी (हिन्दी विभाग)

महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड वि.वि. छतरपुर म.प्र.